अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - शिवप्रसाद सिंह : व्यक्ति एवं कृति परिचय 1 - 15

1.1 व्यक्तिपरिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 परिवार

1.1.4 बचपन

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 विवाह

1.1.7 नौकरी

1.1.8 देहान्त

1.2 व्यक्तित्व कि विशेषताएँ

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

1.2.2.1 मेधावि छात्र

1.2.2.2 स्वभाव

1.2.2.3 अच्छे मित्र

1.2.2.4 प्रतिभासंपन्न

1.3 कृति परिचय

1.3.1 कहानी संग्रह

1.3.2 उपन्यास

1.3.3 नाटक

1.3.4 निबंध

1.3.5 ललित

1.3.6 समीक्षा

1.3.7 रिपोर्ताज

1.3.8 जीवनी

1.3.9 संपादन कार्य

1.3.10 अनुवाद

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - स्वाधीन भारतीय समाज और विवेच्य कहानी साहित्य 16 - 41

2.1 समाज का तात्विक विवेचन

2.1.1 समाज की परिभाषा

2.1.2 समाज का स्वरूप

2.2 स्वाधीन भारतीय समाज : स्वरूपगत विवेचन

2.2.1 सामाजिक स्थिति

2.2.2 राजनैतिक स्थिति

2.2.3 आर्थिक स्थिति

2.2.4 सांस्कृतिक स्थिति

2.2.5 धार्मिक स्थिति

2.2.6 साहित्यिक स्थिति

2.3 विवेच्य कहानी साहित्य : स्वरूपगत विवेचन

2.3.1 सामाजिक विषय से संबंधित कहानियाँ

2.3.2 राजनैतिक विषय से संबंधित कहानियाँ

2.3.3 आर्थिक विषय से संबंधित कहानियाँ

2.3.4 सांस्कृतिक विषय से संबंधित कहानियाँ

2.3.5 धार्मिक विषय से संबंधित कहानियाँ

2.3.6 साहित्यिक विषय से संबंधित कहानियाँ

2.4 विवेच्य कहानी साहित्य : स्वाधीन भारत की उपज

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - विवेच्य कहानियों में चित्रित

स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज 42 - 67

3.1 स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज : सामाजिक जीवन

3.1.1 पारिवारिक जीवन

3.1.2 दांपत्य जीवन

3.1.3 रुढि एवं परंपराएँ

3.1.4 तीज - त्योहार - उत्सव

3.1.5 रहन - सहन - आचरण

3.2 स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज : आर्थिक जीवन

३.२.१ आर्थिक स्थिति तथा आय के स्रोत

3.2.2 बेरोजगारी

3.2.3 अभावग्रस्त आर्थिक जीवन

3.2.4 अर्थाभाव के कारण अनाचार

3.3 स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज : धार्मिक जीवन

3.3.1 धर्म के प्रति विश्वास - अविश्वास

3.3.2 धार्मिक कट्टरता में ढिलापन

3.3.3 धार्मिक विधि-विधान

3.4 स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज : राजनैतिक जीवन

3.4.1 गाँव की राजनीति

3.4.2 पंचायती राज

3.4.3 विशिष्ट वर्ग का वर्चस्व

3.4.4 राजनीति में तिकडम्बाजी

3.4.5 गाँव के सामान्य लोगों का राजनीति से सरोकार

3.5 स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज : सांस्कृतिक जीवन

3.5.1 गाँव की संस्कृति

3.5.2 सांस्कृतिक विधि-विधान तथा परंपरागत मान्यताएँ

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय -विवेच्य कहानियों में चित्रित
स्वाधीन भारत की समस्याएँ 68 - 84

4.1 सामाजिक समस्या

4.2 राजनैतिक समस्या

4.3 आर्थिक समस्या

4.4 धार्मिक समस्या

4.5 शैक्षिक समस्या

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - विवेच्य कहानियों की विशेषताएँ 85 - 102

5.1 चरित्र प्रधानता

5.2 अंधविश्वास एवं रुढि परंपरा

5.3 संवेदनशीलता

5.4 मानवी मूल्यों के प्रति आदर

5.5 यथार्थ का चित्रण

5.6 ग्रामीण जीवन के चित्रण की प्रधानता

5.7 काव्यात्मकता

5.8 भाषागत विशेषताएँ

5.8.1 अंग्रेजी शब्द - प्रयोग की भरमार

5.8.2 संस्कृत सुभाषितों का प्रयोग

5.8.3 कहावतें-मुहावरों का प्रयोग

5.8.4 विविध शैलियों का प्रयोग

निष्कर्ष

उपसंहार **103 - 109**

संदर्भ ग्रंथ सूची **110 - 116**

❑❑❑